जाना। दफ्तर से सीधे चले आया करना। और...अच्छा, चलते हैं। क्यों जल्दी मचा रहे हो, सब बैठ गये? अजी, तुम तो बैठो...और बेटा, कोई ऐसी-वैसी बात न होने पाये। जीते रहो। चलो भैया। थोड़ी उधर सरक, निक्की!

देख, निक्की, एक बात पहले कहे देती हूँ, जैसी हा-हा-हू-हू यहाँ करती है, वहाँ बिलकुल नहीं चलेगी। जरा संजीदा होकर रहना पड़ेगा, समझी? वरना गाँव के लोग मन के बड़े पापी होते हैं। जरा कोई बात देखी कि गाँठ बाँध लेंगे। फिर जब हम लोग चले आयेंगे, तो रस ले-लेकर एक-दूसरे को सुनायेंगे। बड़ी जिज्जी आयी थीं हेमा के ब्याह में। उनके पीछे कित्ती बातें बनीं, मालूम है? वैसे तो गलती जिज्जी की भी थी ही। ज्वान-जमान बेटी को साथ ले गयी थीं, तो अपने बेटे को मना नहीं कर सकती थीं कि भैया, घरेलू ब्याह शादी में दोस्त का क्या काम? लेकिन राधेश्याम भी तो ऐसा ही है। माँ को गिनता ही क्या है? कह दिया होगा, मम्मी, या तो मैं नहीं जाऊँगा, या फिर मेरा दोस्त--क्या भला-सा नाम था उसका?...सुरिंदर, वह जरूर चलेगा। और नतीजा क्या हुआ? सब लोगों ने कहा कि जिज्जी होने वाले दामाद को भी साथ लायी हैं। कोई-कोई कहें छिपके-ऐ भैना, सहर में रहने वालों की क्या है? क्या खबर, गुप-चुप सादी कर ली हो। मैंने तो दो-एक को समझाया भी पर...

अजी, तुम्हारा क्या, तुम तो हर बात में टाँग अड़ाते हो। अब मैं नहीं समझाऊँगी, तो क्या आसमान के फरिश्ते आयेंगे समझाने? तुमको तो बस, हर बात में लेक्चर देती ही दिखायी देती हूँ। ऐसी बात है, तो एक मुसीका ला दो। मुँह पे बाँध के चुपचाप बैठी रहूँगी। ऐ दीपू, सीधे बैठ, गिर पड़ेगा तो सब दाँत टूट जायेंगे। उमा, तू सरक क्यों नहीं जाती? उसे ठीक से बैठ जाने दे। अजी, तुम बिठा लो दीपू को गोद में। ये उमा की बच्ची तो लड़ोकड़ी है पूरी। हँस रही है, बेहया! चलो, उतरो। देख, बहू, सँभलके। निक्की, साड़ी ठीक से क्यों नहीं ओढ़ती? पल्ला पीछे गिरा जा रहा है। सब सामान आ गया? दो इसे, पैसे दे दो। ऐसी जल्दी मचा रहा है, जैसे अम्मा ने भूखा ही ताँगा जोतने भेज दिया हो। अच्छा, तुम टिकट ले आओ। क्या, निक्की क्यों जायेगी टिकट लेने? अच्छा, जनानी खिड़की पे जल्दी मिल जायेगा। पर, तुम साथ तो चले जाओ। देख, खोटे पैसे मत ले आना। ये निक्की तो पूरी बौड़म है। कौन कहेगा कि एम. ए. में पढ़ रही है। हम लोग चलें? कुली कर लें? बुलाओ कुली, ऐ कुली भाई...

जगह तो अच्छी मिल गयी। ऐ भैया, ऐ सरदारजी, जरा इस पंखे को हमारी तरफ मोड़ दो। हे भगवान! इत्ती गरमी है कि पसीने में नहा गये हैं। गाड़ी चले, तो थोड़ी हवा आये। निक्की, क्या बजा है तेरी घड़ी में? साढ़े सात! बस? जल्दी आ गये। गाड़ी तो आठ बजे छूटती है, क्यों जी? अरे तो क्या हो गया? जगह तो आराम से मिल गयी। बहू, तू दीपू को उधर बिठा ले, खिड़की के पास। बाहर देखने का बहुत शौक है इसे। अरे, यह क्या खरीद लायी, निक्की? गाड़ी में बैठकर कहानियाँ पढ़ेंगी मेम साहब! तेरा पेट नहीं भरता पढ़ते-पढ़ते? हाँ जी, हम क्या जानें, तुम ठहरीं नये जमाने की लड़की! पढ़ो, खूब पढ़ो, और ले आओ दस-पाँच। एक से क्या होगा?

क्या कहा? तेरी कहानी छपी है? कहाँ, देखूँ? उँह, बड़ी आयी कहानी लिखने वाली! सुषमा नाम की कोई और लड़की तो जैसे है ही नहीं दुनिया में। पर...अरे, यह तो वही फोटो है, जो बिरजू ने खींचा था। मरी, तू कब से कहानियाँ लिखना सीख गयी? तेरे पेट में तो बहुत बड़ी दाढ़ी है! किसी को बताया भी नहीं। देखते हो जी, अपनी निक्की की कहानी और फोटो छपा है। मुँह मीठा मैं कराऊँ? तुम बाप हो, तुम खिलाओ मिठाई। देख, बहू, तू भी देख ले अपनी गुणवंती ननद के काम। कैसी बैठी है फोटो में, दाँत निकालती हुई। क्या, पचास रुपये मिलेंगे? घर बैठे? तब तो तू खिला, निक्की, मुझसे उधार लेकर मिठाई ले ले। अरे ओ, मिठाई वाले! अजी, जरा उठके ले लो!

पर, निक्की, तुझे यह सब किसने सिखा दिया? कैसे सीख गयी तू? अपने-आप? भैया का दोस्त कौन? राजे? राजे भी कहानियाँ लिखता है? अच्छा, तो तुम दोनों भाई-बहन मुझे बेवकूफ बना रहे थे? बेवकूफ नहीं तो और क्या? बिरजू कहता था कि राजे निक्की की मदद कर रहा है पढ़ाई-लिखाई में। तो यह पढ़ाई-लिखाई होती थी! लो, खाओ तुम लोग। मैं नहीं खाऊँगी। मैं खाती हुई अच्छी लगूँगी? गाड़ी में बैठकर? नहीं-नहीं, तुम लोग खाओ। नाराज क्यों होऊँगी? होकर भी क्या कर लूँगी? अच्छा-अच्छा, ठीक है, लाओ। ऐ, उमा की बच्ची, सीधी तरह बैठ जा, नहीं तो पिट जायेगी मेरे हाथ से। आ ठहर, मैं बिठाती हूँ तुझे खिड़की के पास! तुम छोड़ दो, जी! मारूँगी नहीं, तो क्या भगवानजी के आले में बिठाके पूजा करूँगी? मरी ने नाक में दम कर रक्खा है। दुनिया भर की कुटेवें अपनी ही औलाद में भरी पड़ी हैं। अब खाती क्यों नहीं? नखरे क्यों कर रही है। मैं नहीं खाती। मुझसे बँधी है क्या तू?...तू चुप नहीं होगी, उमा? जरा हाथ छुआ दिया, तो बिसूर रही है बैठी।

चली अब! सवा आठ बजे छोड़ रहे हैं। इन रेलवे वालों की लापरवाही की भी हद है। मुसाफिर दुख पायें तो पाते रहें, इन्हें क्या परवाह! ये तो अपनी मनमानी करेंगे। अरे, जब आठ का टाइम है, तो सवा आठ बजे क्यों छोड़ते हो गाड़ी? पर कौन कह सकता है! आग लगे इस नये जमाने में। अच्छा जमाना आया है।

निक्की, एक बात मानेगी बेटा? क्या कहूँ, गाँव का मामला है, इसीलिए कह रही हूँ। पहले तू हाँ कह दे। हाँ, देख, यह तेरी कहानी वाली पत्रिका कोई देखेगा, तो क्या कहेगा? तू नहीं जानती, कैसे-कैसे लोग हैं वहाँ, तिल का ताड़ बनाते देर नहीं लगती। बड़ी जिज्जी की लड़की की तरह तेरी भी बदनामी हो, यह मैं नहीं चाहती। वापस लौटकर तू और खरीद लेना।

करना क्या है! नहीं-नहीं, यों मत फेंक! सारी क्यों फेंकती है? आखिर पैसे खर्च हुए हैं। ला, मुझे दे। तेरी कहानी के ये तीन पन्ने फाड़ देती हूँ, बस!

अरे, यह क्या? यह इसी महीने की पत्रिका है? मार्च की? तो क्या यह मार्च है? अप्रैल नहीं? शादी तो अप्रैल में है..■